بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 06 नवम्बर 2024, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

सुलह-ए-हुदैबियः के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयानI

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 06.12.24

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

uतशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सुलह-ए-हुदैबियः (मुसलमानों और काफ़िरों के बीच होने वाला शांति समझौता जिसको क़ुरआन ने मोमिनों की स्पष्ट विजय फ़रमाया है) के विषय में आज कुछ और अधिक व्याख्या बयान करूंगाI

सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. लिखते हैं कि सन्धियों में त्रुटियाँ रह जाया करती हैं जो कई बार बाद में महत्वपूर्ण परिणाम के रूप में प्रकट होती हैंI अतएव इस सन्धि में भी यह त्रूटी रह गई थी, इस सन्धि में यदपि मुस्लमान पुरुषों से सम्बंधित स्पष्ट नियम था किन्तु मुस्लिम महिलाओं का कोई उल्लेख नहीं थाI

अभी सन्धि को कुछ दिन ही हुए थे कि कुछ मुस्लिम महिलाएं मक्का के काफ़िरों से छुट कर मदीना पहुँच गईंI उनमें सर्वप्रथम मक्का के मृत मुशरिक रईस बिन उक़बा इब्न अबी मुईत की पुत्री उम्मे कुलसूम थी जो माँ की ओर से हज़रत उसमान बिन अफ्फ़ान की बहिन भी होती थींI उम्मे कुलसूम अति साहस के साथ पैदल ही लम्बी यात्रा करके मदीना पहुँचीं और आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर अपने इसलाम को प्रकट कियाI उसके पीछे पीछे उसके दो काफ़िर रिश्तेदार भी मदीना आ गए और उसकी वापसी की मांग करने लगेI उनका कहना यह था कि यद्यपि सन्धि में केवल पुरुष शब्द का प्रयोग हुआ है किन्तु यह सबके लिए है तथा पुरुष एवं महिला दोनों पर समान प्रभाव रखता हैI उम्मे कुलसूम समझौते के शब्दों के साथ साथ इस कारण से भी, कि महिला एक दुर्बल प्राणी होती है, वापसी के लिए तय्यार न थींI

आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने स्वभाव एवं न्याय की दृष्टि से उम्मे कुलसूम के पक्ष में फैसला फ़रमायाI उन ही दिनों यह आयत नाज़िल हुई कि यदि कोई महिला मक्का से मदीना आए तो उसकी भली भाँती परीक्षा ले लो, तथा यदि वह नेक एवं निष्ठावान साबित हो तो उसे

कदाचित वापस मत लौटाओ, परन्तु यदि वह विवाहित हो तो उसका महर उसके मुशरिक पति को अवश्य अदा कर दोI

समझौते की एक शर्त यह थी कि यदि कोई मुस्लिम पुरुष मक्का से मदीना आएगा तो उसे वापस लौटाया जाएगा, परन्तु यदि कोई पुरुष मदीना से मक्का जाएगा तो काफ़िर उसे वापस करने के पाबन्द न होंगेI प्रत्यक्षतः इस शर्त का अभिप्रायः मुसलमानों का अपमान समझा गया था परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं थाI आरम्भ में ही आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमा दिया था कि हाँ! ठीक है, जो व्यक्ति मदीना छोड़ कर मुसलमानों से अलग होकर जाएगा, ऐसे पाखंडी तथा ऐसे गन्दे अंग को मदीने में वापस लेने की क्या आवश्यकता हैI सन्धि को अभी कुछ समय ही बीता था कि अबू बसीर जो मक्का का रहने वाला था, मुसलमान होकर मदीने आ गया किन्तु समझौते के अनुसार आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों की मांग पर उसे उनके साथ भेज दियाI जब यह पार्टी उसे साथ लेकर जा रही थी तो रास्ते में उसने अवसर पाकर पार्टी के मुख्या की हत्या कर दी तथा दूसरा व्यक्ति भाग कर मदीना आ गया और उसके पीछे पीछे अबू बसीर भी मदीना आ गयाI अबू बसीर ने आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि आप स. ने मुझे काफ़िरों को दे दिया था और इस प्रकार आप स. का दायित्व पूरा हो गया, परन्तु ख़ुदा ने मुझे दुष्ट क़ौम से मुक्ति दे दीI आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- यह व्यक्ति तो युद्ध की आग भड़का रहा हैI इस पर अबू बसीर ने यह जानकर कि आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम तो हर हाल में समझौते के कारण उसे वापस जाने का निर्देश देंगे, वह चुपके से मदीने से निकल गया और एक अलग स्थान पर अपना ठिकाना बना लियाI जब मक्का के दूसरे कमज़ोर मुसलमानों को अबू बसीर के अलग ठिकाने का पता चला तो वे भी धीरे धीरे वहां जमा होना शुरू हो गएI उन्हीं लोगों में मक्का के सरदार सुहैल बिन उमरू का लड़का अबू जन्दल भी थाI इन लोगों कि संख्या सत्तर, और कुछ अन्य रिवायतों में तीन सौ तक बयान की गई हैI इस प्रकार धीरे धीरे मदीने के अतिरिक्त एक और मुस्लिम रियासत वजूद में आ गईI चूंकि यह इलाक़ा शाम देश के रास्ते में था इस लिए इन मुसलमानों की प्रायः मुटभेड़ काफ़िरों के साथ रहती थी और इस नए मोर्चे से तंग आकर काफ़िरों ने ख़ुद आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि इन मुसलमानों को भी वापस बुलवा लेंI जब आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम का पत्र अबू जन्दल और अबू बसीर के पास पहुंचा तो अबू बसीर बीमार होकर निष्क्रिय हो गया थाI उसने बड़े चाव से हुज़ूर स. के पत्र को हाथ में थामे रखा और उसी अवस्था में उनका निधन हो गया जबकि शेष मुसलमान मदीना आ गएI

पश्चिमी पक्षपाती विद्वान लेखक अपने स्वभाव के अनुसार आपत्ति करते हैं, इन आपत्तियों में से दो ध्यान देने योग्य आपत्तियों पर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने आलोचना की हैI जिन में से पहली आपत्ति महिलाओं को वापस करने पर सन्धि की अवहेलना का है और दूसरी आपत्ति अबू बसीर एवं अबू जन्दल की घटना पर हैI

इन आपत्तियों के जवाब में यह याद रखना चाहिए कि पहली बात तो यह है कि यह सन्धि मक्का के काफ़िरों के साथ हुई थी जो पहले दिन से ही मुसलमानों के विरुद्ध उत्सुक थेI फिर यह कि ख़ुद मक्के के काफ़िरों की गवाही मौजूद है कि आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी समझौतों की अवहेलना नहीं की, अतः जब रौम के राजा हर्कुल को आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम का तबलीगी पत्र मिला तो उसने अबू सुफ्यान को जो उस समय काफ़िरों के सरदारों में से था और उस समय शाम देश में मौजूद था, उसे बुलाया और यही सवाल किया तो अबू सुफयान ने जवाब देते हुए कहा कि नहीं! मुहम्मद (सललल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कभी समझौतों की अवहेलना नहीं कीI

महिलाओं की वापसी पर आपत्ति के अंतर्गत हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने सही बुख़ारी में लिखे हुए शब्दों को पेश करते हुए फ़रमाया कि इन स्पष्ट तथा शर्त विहीन शब्दों के होते हुए यह आपत्ति करना केवल अन्याय नहीं बल्कि अत्यंत बेइमानी हैI यदि यह कहा जाए कि इतिहास की कुछ रिवायतों में सन्धि के शब्दों में "रजुल" (पुरुष) का शब्द नहीं बल्कि सामान्य शब्द उपयोग में लाए गए हैं जिनसे स्त्री एवं पुरुष दोनों समझे जा सकते हैंI इसका जवाब यह है- अव्वल तो सुदृढ़ रिवायत, जिसमें "रजुल" शब्द आता है, उसी को प्राथमिकता दी जाएगीI दूसरा यह कि ऐतिहासिक रिवायतें जिनमें विभिन्न शब्द आते हैं, वे भी इसी व्याख्या को दर्शाते हैं जो की गई हैI उदाहरणतः सीरत इब्ने हिश्शाम में जो शब्द हैं वहां निःसन्देह पुरुष का शब्द नहीं, किन्तु समस्त व्याकरण वही है जो पुरुषों के लिए उपयोग में लाई जाती हैI

दूसरी आपत्ति जिसका सम्बन्ध अबू बसीर की घटना से है, यह भी विचार करने पर बिलकुल निरर्थक लगती हैI निःसन्देह आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सन्धि की थी, परन्तु सवाल यह है कि क्या आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस समझौते की अवहेलना की? कदाचित नहीं! आप स. ने तो इस सन्धि की पाबन्दी का शानदार नमूना दिखायाI

विचार करें! अबू बसीर इसलाम की सच्चाई को स्वीकार करके मक्का से भागता है, छिपता छिपाता मदीने पहुँच जाता है, परन्तु उसके दुष्ट रिश्तेदार उसके पीछे पहुँच जाते हैं और तलवार का ज़ोर दिखाकर वापस ले जाना चाहते हैंI दोनों पक्ष आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होते हैंI अबू बसीर आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम से भर्राई हुई आवाज़ में निवेदन करता है कि या रसूलुल्लाह सललल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे ख़ुदा ने इसलाम की अनुकम्पा प्रदान की है और मक्के वापस जाने में दुःख एवं कठिनाई वाला जीवन मेरे सामने है, आप स. जानते हैं, ख़ुदा के लिए मुझे वापस न भिजवाएँI दूसरी ओर अबू बसीर के रिश्तेदार उस समझौते का हवाला देते हैं, आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम के अपने दिल में बड़ा दुःख था परन्तु ऐसे समय पर भी आप स. ने अमानत और ईमानदारी का पूरा ध्यान रखाI

आप स. ने फ़रमाया- ऐ अबू बसीर! तुम जानते हो कि हम इन लोगों से पक्का वादा कर चुके हैं और हमारे दीन में वादा तोड़ना जायज़ नहीं है, अतएव तुम इन लोगों के साथ चले जाओ और अगर फिर तुम इसलाम पर धैर्य एवं सुदृढ़ता के साथ क़ायम रहोगे तो ख़ुदा तुम्हारे लिए और तुम जैसे पीड़ितों के लिए ख़ुद कोई मुक्ति का मार्ग खोल देगाI नबी करीम स. के इस वक्तव्य पर अबू बसीर वापस चला गयाI इस घटना के बाद के विवरण पर यदि आपत्ति की जाए कि मक्का से निकलने वाला व्यक्ति चाहे कहीं भी हो आप स. उसे मक्का वापस पहुँचाने के लिए उत्तरदायी होंगे, तो समझौते में ऐसी कोई बात नहीं थीI मदनी राजनीति की परिधि से बाहर लोगों को वापस मक्का पहुँचाने का उत्तरदायी आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानना, बुद्धि के विरुद्ध बात हैI यह शर्तें मक्के के काफ़िरों ने ख़ुद रखी थीं और जो कांटे उन्होंने ख़ुद बोए थे वे ख़ुद ही उनका शिकार हुएI निःसन्देह वे लोग जो अबू बसीर के साथ उस इलाक़े में जमा हुए, धार्मिक दृष्टि से मुसलमान थे, किन्तु सांसारिक, राजनैतिक, शासनिक तथा वैधानिक दृष्टि से आप स. का उन पर कोई अधिकार नहीं थाI यह शर्त कि वे लोग राजनैतिक दृष्टि से आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम के आधीन न होंगे, स्वंम काफ़िरों ने रखी थी, जब ख़ुद काफ़िरों ने इन मुसलमानों को आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम की राजनीति से निकाल दिया तो फिर आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आपत्ति कैसीI यह मक्के के काफ़िरों की अपनी चाल थी जो ख़ुद उन्हीं पर लौट कर गिरीI आप स. का दामन जो पवित्र था पवित्र रहाI आप स. ने सन्धि के शब्दों को भी निभाया और अबू बसीर को मक्के वालों के हवाले करते हुए मदीने से विदा कर दिया और फिर आप स. ने समझौते की मूल आत्मा को भी पूरा किया, और अबू बसीर तथा उसके साथियों को

अपनी राजनीती की परिधि से बाहर रखाI परन्तु ये लोग न्याय से काम नहीं लेते और इसलाम तथा आँहज़रत सललल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात पर निराधार आपत्ति करते हैंI

हुज़ूरे अनवर ने ख़ुत्बे के अंत में फ़रमाया कि आज भी न्याय के ठेकेदारों के यही दोहरे स्तर हैं, आज भी इसी चीज़ ने दुनिया में फ़साद पैदा किया हुआ हैI अल्लाह तआला आज भी दुनिया को और विशेष रूप से मुसलमानों को इन दज्जाल के फ़ितनों से बचाएI

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا

مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ

وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ

يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131